Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 1188–1192

NECESSITY AND USEFULNESS OF VEDIC THINKING IN THE CURRENT GLOBAL CONFLICT

वर्तमान वैश्विक संघर्ष में वैदिकचिन्तन की आवश्यकता और उपादेयता

Ishvar Singh Shekhawat [1]

[1] Independent Researcher, University Topper (Gold Medalist), Former Researcher, University of Rajasthan, Department of Science and Technology, Government of India, Under DST-SHRI Project, Banasthali Vidyapeeth, Banasthali, Tonk, Rajasthan

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.3172

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: In the present world, humans have bound themselves, the monstrous forms of which are appearing before us. Man considers himself a part of a specific country and considers other countries of the world as separate from himself. Due to this, different countries are suffering mutual discrimination and causing harm to each other. Vedic thinking, which carries with it the special feeling of establishing the entire world as one home with the spirit of 'Vishvam Bhavatayekanidam', is the only solution available to everyone which can help everyone walk on the path of peace and achieve mutual world brotherhood. Always paves the way for establishing the feeling. Due to its deep contemplation, it shows the way to move forward on the path of continuous development for the past, present and future. It inspires us to move forward together by showing the right path for mental, physical and spiritual development. It establishes an ideal life before everyone by abandoning the spirit of 'Ekla Chalo Re' and reinforcing the spirit of 'Sangachchadhvam Samvaddhvam'.

Hindi: वर्तमान विश्व में मनुष्यों ने स्वयं ही स्वंय को बद्ध कर लिया है, जिसके विकराल रूप हमारे समक्ष उपस्थित हो रहे है । मनुष्य अपने आपको देश विशिष्ट का ही भाग मानकर विश्व के अन्य देशों को अपने से पृथक् मान रहा है । इसके कारण विभिन्न देश आपसी भेदभाव का शिकार एक-दूसरे को हानि पहुंचा रहे है । 'विश्वं भवत्येकनीडं' की भावना के साथ सम्पूर्ण विश्व को एक ही घर के रूप में स्थापित करने की विशिष्ट भावना को साथ लिए चलने वाले वैदिक चिन्तन ही वो एकमात्र उपाय के रूप में सभी के विद्यमान है जो सभी को शांति की राह पर चलकर परस्पर विश्वबन्धुत्व की भावना को स्थापित करने हेतु सदैव मार्ग प्रशस्त करते है । इसके गहन चिन्तन-मनन के कारण यह अतीत, वर्तमान एवं भविष्य हेतु निरन्तर विकास के पथ पर आगे बढने की राह दिखाता है । यह मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास हेतु उचित पथ प्रदर्शित करते हुए मिलकर आगे बढने के लिए प्रेरित करता है । 'एकला चालो रे' की भावना का परित्याग कर 'संगच्छध्वं संवदध्वं' की भावना को पुष्ट कर सभी के समक्ष आदर्श जीवन की स्थापना करता है ।

Keywords: Present Time, Problems, Solutions, Vedic Thought, Like Thoughts, Like Feelings, Let's all Go Together, The Institution of World Order, Vedic Way of Life, Indian Culture, Life Values, Awareness Towards Nature, World Unity, Vedic Sacrificial Rituals, Vasudeva Kutumbkam, वर्तमान समय, समस्याएं, उपाय, वैदिक चिन्तन, समानविचार, समान भावनाएं, सब एक साथ चलो, विश्वव्यवस्था की संस्था, वैदिक जीवन पद्धति, भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्य, प्रकृति के प्रति जागृति, विश्व एकता, वैदिक यज्ञ कर्म, वसुधैव कुटुम्बकम्

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में विश्व जैसे-जैसे तीव्र विकास की ओर बढ़ रहा है वह अपने लिए अनेक समस्याएँ तथा उलझने भी तैयार कर रहा है । विश्व के सम्पूर्ण मानव समुदाय को यह तो आभास है कि उन्हें अत्यधिक विकराल रूप से अपने ही द्वारा तैयार किये जा रहे साधनों से बहुत बड़ी-बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा; लेकिन किसी को भी यह नही पता कि उनसे वास्तविक रूप से बचा किस प्रकार जायेगा ? वेद ऐसे आधार है जो इनके लिए एक उचित दिशा प्रदर्शित करता है । वर्तमान समय में विश्व के समक्ष जो कठिन समस्याएं उपस्थित है वे विभिन्न प्रकार के आतंकवाद, पर्यावरण असंतुलन, बेरोजगारी, राष्ट्रों के आपसी मतभेद तथा सामाजिक व आर्थिक विकास में विकसित राष्ट्रों की स्वार्थपूर्ण सीमित भूमिका आदि प्रमुख रूप से उभर कर

आ रहे है ; इनमें आतंकवाद एवं वैश्विक-संघर्ष तो समूचे विश्व के लिए एक अजीब समस्या बन चुके हैं । इसको बढ़ावा देने में वैश्विक-संघर्ष के पीछे कुछ विशिष्ट आपसी मतभेद तथा आतंकवाद के पीछे कुछ लोगों की संकुचित सोच होती है और इस सोच के कारण सभी के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

इस प्रकार की सभी बुराइयों से निपटने का एक प्रमुख उपाय है – विश्वबन्धुत्व तथा विश्व के सभी लोगों की मंगलमयी तथा समानता की सोच । यह उपाय वैदिक-चिन्तन तथा भारतीय संस्कृति की विचारधारा का प्रमुख सूत्र रहा है ।

2. समानता का भाव

वैदिक संस्कृति में सम्पूर्ण राजनैतिक विकास, सामाजिक विकास, आर्थिक विकास तथा अन्य सभी के समग्र संतुलित विकास की नैतिक अवधारणा बताई गई है, जिसके द्वारा बिना पर्यावरण, प्रकृति व सम्पूर्ण विश्व को नुकसान पहुँचाये तथा बिना आपसी मतभेद के समुचित विकास किया जा सकता है । वेदो में बताया गया है कि –

"संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसिजानताम्"[1]

तुम सब एक साथ चलो, एक दूसरे से संवाद रखो तथा तुम एक दूसरे के मन को जानों ।

"समानोमन्त्रः समिति समानं मनः सह चित्तमेषाम्"[2]

तुम्हारे मन्त्र, विचार, मन्त्रणा समान हो तुम्हारी सभा या बैठक समान भाव वाली हो, तुम सभी की मननशीलता या संकल्प एक समान हो, तुम सब के विचार आपस में मिलते-जुलते हो ।

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।"[3]

तुम्हारे आपसी अभिप्राय एवं संकल्प समान हो, तुम्हारे हृदय भाव या तुम्हारी भावनाएँ समान हो । तुम सभी का मन समान हो अर्थात् स्थिर हों, जिससे तुम सब अच्छी तरह साथ निभाते हुए साथ रहो ।

इस प्रकार वेदो में बताया गया है कि 'सब एक साथ चलो'[4] अर्थात् जब विश्व का प्रत्येक मनुष्य इस सोच को अपने हृदय में स्थापित करता है तो अनेको समस्याओं का हल आसानी से मिल जाता है । यदि संसार के सभी लोग मिलकर आपसी सामञ्जस्य के भाव के साथ एक साथ चलेंगे और रहेंगे तो सभी राष्ट्रों का सीमा-विवाद, आपसी व्यापार, उनकी धार्मिक व सामाजिक विकास से जुड़ी समस्याएं स्वतः समाप्त हो जायेंगी अथवा उनका उचित समाधान मिल जायेगा । सभी मनुष्य यदि एकसाथ चलते हुए एक दूसरे से संवाद करेंगे तथा एक दूसरे के मन को जानेंगे तो विश्व में विश्वबन्धुत्व तथा **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना साकार होगी तथा उनके विचार तथा अभिप्राय भी समान रहेंगे; जिससे आपसी वैमनस्यता भी दूर होगी । विचार, संकल्प, मन तथा अभिप्राय सभी समान होने चाहिए यह वेदो में मूल मन्त्र के रूप में निहित है ।

3. प्राकृतिक सुरक्षा

वेद विश्व के समस्त धर्मों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों एवं मान्यताओं का सरल साधन एवं विश्वव्यवस्था की संस्था है । **"अग्निमीळे पुरोहितम्"**[5] यह ऋग्वैदिक संहिता के प्रथम मंत्र का मन्त्रांश है, जो विश्व के धर्मो में अग्नि एवं कर्मकांड की महत्ता की सूचना देता है । विश्व के धर्मों में प्रकृति पूजा के आलोक में इन दो पदार्थो को किसी न किसी रूप से अवश्य ही अपनाया गया है । यह प्रकृति की देवों के रूप में पूजा इस सृष्टि को सुरक्षित बनायें हुए थी, लेकिन वर्तमान में मनुष्य अपनी बढ़ती हुई इच्छा के कारण इन सब को भूल चूका है और इसी कारण वह स्थिर प्रकृति के भाव को अस्थिर बनाकर उससे उत्पन्न होने वाली बाढ़, अल्पवृष्टि, भूकम्प तथा चक्रवात आदि अनेक समस्याओं को बुलावा दे रहा है । यदि पुनः वैदिक-दृष्टि को पूरा विश्व अपनाये तो इन समस्याओं से बचा जा सकता है अथवा इनका समाधान मिल सकता है ।

विश्वसभ्यता, विश्वसंस्कृति, विश्व के मानव इतिहास एवं विश्व में मानव-जीवन मूल्य की प्रारम्भिक स्थिति को समझने के लिए वैदिक साहित्य का योगदान सर्वमान्य है । विशेषरूप से भारतीय संस्कृति, सभ्यता व भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों के बीच सामञ्जस्य एवं आध्यात्मिक एकता के सूत्र को पहचानने का एकमात्र साधन वैदिक साहित्य ही है । आज स्थिति यह है कि विश्व की मानव-सभ्यता का इतिहास वैदिक साहित्य को अनदेखा कर नहीं

[1] ऋग्वेद - संज्ञान सूक्त – (10/191/2)
[2] ऋग्वेद - संज्ञान सूक्त – (10/191/3)
[3] ऋग्वेद - संज्ञान सूक्त – (10/191/4)
[4] ऋग्वेद - संज्ञान सूक्त – (10/191/2)
[5] ऋग्वेद - अग्नि सूक्त – (1/1/1)

चल सकता, न कोई समाजशास्त्री इसकी अनदेखी कर सकता तथा न कोई अर्थशास्त्री इससे अछूता रह सकता है । जहाँ तक भारतीयों का प्रश्न है, वे तो वैदिक-जीवन पद्धति से इतने गहरे रूप से सम्बद्ध है कि उनकी सोच, भावना, धार्मिक प्रवृत्तियाँ एवं जीवन-पद्धतियाँ वैदिक संस्कारों से सुसम्बद्ध प्रतीत होती है ।

वेदों का सृष्टि-विज्ञान में भी अतुलनीय योगदान है । अध्यात्मविज्ञान में सृष्टिविज्ञान एक ऐसी कड़ी है जो आधुनिक सृष्टिविज्ञान को आगे सोचने के लिए उर्जा प्रदान करती है । इस कड़ी का काम ऋग्वेद का **नासदीय सूक्त**[6] सहित अनेक सृष्टिविज्ञान सम्बद्ध सूक्त एवं मन्त्र करते है । आधुनिक विज्ञान जहाँ सृष्टि के मूल में चैतन्यांश को लेकर दुविधा में है, वही वैदिक साहित्य **प्रजापति**[7] को एक चैतन्य के रूप में स्पष्ट रूप से उल्लिखित करता है । इस प्रकार सृष्टि प्रक्रिया को समझने के लिए वैदिक ऋषियों की अनुभूति जो वैदिक सूक्तो एवं मन्त्रों में अभिव्यक्त है, को समझने की दृष्टि से वेदों का महत्त्व है । विष्णु, प्रजापति एवं रूद्र देवों से सम्बद्ध सूक्तों के अध्ययन से तथा आरण्यक एवं उपनिषदों के मनन तथा चिन्तन से संसार की सर्जना, विकास एवं जन्म की उत्तर गति का भलिभाँति ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । श्रीकृष्ण ने गीता में **'त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्यो भवार्जुन'**[8] – इस पंक्ति के माध्यम से वेद की सृष्टि एवं सृष्टिसंकोच के रहस्य को स्पष्ट रूप से समझा दिया गया है । यही माया के त्रिगुण वेदान्त में अज्ञान के स्वरूप को दर्शाते है एवं उस अज्ञानोपहित चैतन्य से सृष्टि की प्रक्रिया शुरू होती है । इधर सांख्य के पुरूष को तथा न्यायवैशेषिको के सेश्वर अनीश्वरवाद को भी वैदिक सम्बल प्राप्त है । अतः सृष्टिविज्ञान के सम्यक् अध्ययन एवं तत्सम्बद्ध शोधकार्य के लिए वैदिक साहित्य का गहन अध्ययन आवश्यक है ।

4. दार्शनिक विकास में योगदान

वेदों की दृष्टि दर्शन एवं साहित्य के रूप में अद्भूत रही है । वैदिक साहित्य की भूमिका भारतीय दर्शनों की सभी प्रकार की आस्तिक-नास्तिक विचारधाराओं को समझनें में महत्वपूर्ण मानी जाती है । ये सम्पूर्ण भारतीय दर्शन वेदों में 'तिल में तेल' की तरह व्याप्त है । सांख्य दर्शन के प्रकृति-पुरूष का यदि प्रतीक रूप में यहाँ वर्णन मिलता है, तो ईशावास्योपनिषद् के 'ईश' पद से सेश्वर एवं अनीश्वरवाद का असत् इत्यादि पदों से प्रथमदृष्ट्या दर्शन होता है । वैदिक साहित्य में कहा गया है कि कौन इसे जानता है कि यह सृष्टि कहाँ से आयी और किसने बनायी ? यदि कोई जानता है तो वही जानता है, जिसने इस सृष्टि को आगे बढ़ाया । इसी प्रकार **'कस्मै देवाय हविषा विधेम'**[9] , **'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्तिः'**[10] इत्यादि वेदवाक्य ही भारतीय दर्शनों के विभिन्न मतों के सूत्र रहे है, जिनसे नास्तिक एवं आस्तिक धाराएँ चिन्तनस्तर के अनुसार आगे प्रवाहित होती गई । इन वैदिक ऋषियों द्वारा आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टि का विविधरूपों में आविष्कार किया गया तथा उन्हें सूत्रबद्ध कर शिष्यों को उपदेश दिया गया । इन सूत्रो की पुनः व्याख्याएं होती गई एवं व्याख्याओं के माध्यम से भारतीय दर्शन की विविध धाराएँ समयानुसार प्रवाहित होती गई । ये भारतीय दर्शन परस्परविरोधी आत्यन्तिक रूप से न होकर भविष्य में उत्पन्न होने लायक मानवप्रकृत्ति की विविध प्रवृत्तियों के अनुसार उठने वाले प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का प्रतिनिधित्व करती है । अतः वैदिक ऋषियों ने दर्शन की एक अति सूक्ष्म दृष्टि वैदिक मंत्रो के माध्यम से प्रकाशित की थी जिसे ध्यान से उन्होनें अनुभव किया था । यही आध्यात्मिक प्रकाश वाणी के माध्यम से अभिव्यक्त होकर बौद्धिक व्यायाम का आधार बना । पुनः उसी प्रकाश को पाने के लिए सकारात्मक-सात्त्विक तर्क-वितर्क का सहारा लेकर योगीजन अध्यात्मतत्त्व को विभिन्न रूपों में प्राप्त करते रहे जो मूल में एक ही है । अतः वैदिक साहित्य का यही रहस्य प्राणविद्या एवं आत्मविद्या प्रधान उपनिषदों में प्रधानतया विद्यमान है ।

5. जीवन पद्धति को समझने में सहायक

वैदिक साहित्य के अध्ययन के द्वारा ही हमारी जीवन पद्धति की सार्थकता एवं वैज्ञानिकता समझ में आती है । हमारे संस्कार वर्णव्यवस्था के वैज्ञानिक पक्ष, पुरूषार्थ चतुष्टय एवं यज्ञ विज्ञान इत्यादि भारतीय सांस्कृतिक स्तम्भों पर वैदिक साहित्य का ही प्रभाव झलकता है । इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के अनुयायियों का जीवन मूल्य, जीवन-मर्यादा, जीवनलक्ष्य एवं नैतिक विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन भी सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के आलोक में तथा इसकी व्याख्या पद्धतियों के अनुसरण से ही संभव है । प्राकृतिक सम्पदाओं को धार्मिक अनुष्ठान का अंग मानकर नदी, पर्वत, वृक्ष इत्यादि में देवत्व को देखना निश्चित ही वैदिक ऋषियों की प्रकृति के प्रति जाग्रत रहने तथा उसे ससम्मान सुरक्षित रखने की भावना भी थी । आज धीरे-धीरे इस और हमारी दृष्टि आकृष्ट हो रही है । इसके अतिरिक्त पशु-पक्षियों के प्रति भी आदर के जो भाव वैदिक साहित्य में दिखाई देते है, वे सब प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति की व्यापक तथा विश्वकल्याण के प्रति सहज प्रवृत्ति को ही लक्षित करतें है । विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशान्ति की सन्देश वाहिका हमारी वैदिक संस्कृति पृथिवी एवं पृथिवी पर रहने वाले समस्त जीवों की समान रूप से कल्याण की भावना को अभिव्यक्त करती है ।

[6] ऋग्वेद - नासदीय सूक्त – (10/129/1)
[7] ऋग्वेद - हिरण्यगर्भ सूक्त – (10/121/1)
[8] श्रीमद्भगवद्गीता – (2.45)
[9] ऋग्वेद – हिरण्यगर्भ सूक्त – (10/121/1)
[10]ऋग्वेद – (1.164.46)

इसी प्रकार 'पुरूषार्थी व्यक्ति को ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है'- इस भाव को अभिव्यक्त करता हुआ अथर्वेद का मन्त्रांश दृष्टव्य है –

"चोदयेन्द्र राये रभस्वतः"[11] - हे इन्द्र! तुम पुरूषार्थी लोगो को ऐश्वर्य के लिए प्रेरित करो ।

6. सुयोग्य मानव निर्माण का साधन

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वैदिक-अध्ययन का प्रारम्भ अध्ययन कर्ता के स्वास्थ्य, चरित्र, इन्द्रिय निग्रह एवं अन्य अनुशासनों को पालन कराने के साथ होता है, जिसका उल्लेख शिक्षाग्रन्थों एवं प्रतिशाख्यों में प्राप्त होता है । प्रारम्भिक अवस्था में ही छात्र को एक दैवी नमुना बनाकर अध्ययन प्रारंभ कराया जाता है, जिससे वह पुस्तकीय एवं वैषयिक ज्ञान के साथ मानवता एवं नैतिकता को भी प्रारम्भ से ही समझ कर आगे पूर्ण मानव बनने का प्रयास करता है। इस प्रकार के आचरण युक्त वेदाध्ययन से उसमें सन्तोष, धैर्य, त्याग, इन्द्रियनिग्रह एवं तपस्या का सञ्चार होता जाता है, जो उसे समाज में आगे चलकर स्वच्छन्दता, उच्छृंखलता, हिंसा, ईर्ष्या-द्वेष इत्यादि से अलग रखते हुए समत्वप्रिय एवं बुद्धिमान बनाने में सहायक होते है । ऐसा पूर्ण योग्य व्यक्तित्व वाला नागरिक हमेशा ही यह सोचता है कि मैं पथ-भ्रष्ट ना होऊँ । वह अपने ब्रह्मवर्चस्व तेज का सदुपयोग राष्ट्रकल्याण के लिए करने में विश्वास रखता है । मानवता के विरूद्ध आचरण न करता हुआ राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यपरायण एवं त्यागी होता है । वह अतिभोगी स्वार्थी न होकर समाज में सुख शान्ति को बनाये रखने में सक्षम होता है । व्रत-उपवास के माध्यम से बचाये हुए अन्न एवं अन्य वस्तुओं को आवश्यकता वाले व्यक्तियों को दान देकर समाज में सब को समान रूप से सुखी रखने का प्रयास करता है । इन मूल्यों की स्थापना से ही उपर्युक्त सभी सामाजिक एवं राष्ट्रिय समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है । भविष्य में वैदिक मार्ग ही विश्व की शान्ति में योगदान देगा, क्योंकि यह सारी मानव जाति एवं विश्व को अपना परिवार समझता है ।

वेदों के आध्यात्मिक एवं आधिदैविक महत्त्वों के साथ भौतिक महत्त्व को विश्वशान्ति तथा राष्ट्रीय एकता एवं समृद्धि के लिए अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए । आज भारत सहित सम्पूर्ण विश्व जिन समस्याओं से जुझ रहा है उनमें आपसी सीमा विवाद, आतंकवाद, बेरोजगारी, तानाशाही, रोगों का आक्रमण, महिला-अत्याचार, भ्रष्टाचार इत्यादि असाध्य सी नजर आ रही है । इन सभी समस्याओं का व्यवस्थित, समुचित एवं स्थायी निदान एकमात्र वैदिक साहित्य के पास है । जिसमें मानव के मन को शान्त एवं सकारात्मक मार्ग की ओर मोड़ देने की क्षमता है । यह होम्योपैथिक एवं आयुर्वेदिक निदान का काम करता है, जो समस्या की तह तक जाते है । सर्वप्रथम हम आतंकवाद को ले तो यह बात हमें पूर्ण रूप से समझ आ जाती है कि आतंकवाद के पीछे अशिक्षा, बेरोजगारी एवं तामसिक प्रवृत्ति युक्त मानसिकता से उत्पन्न ईर्ष्या, द्वेष एवं प्रतिशोध की कुटिल भावना है । सबसे मूल कारण नवयुवकों की अकर्मण्यता है, जिसका समाधान - 'कुर्वेन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेत्'[12] के माध्यम से वैदिक साहित्य प्रस्तुत करता है । सकारात्मक कर्मशीलता व्यक्ति को नकारात्मक मानसिक उथल-पुथल से बचाती है । अतः व्यक्ति को व्यक्ति के प्रति संवेदनशील बनाने का एक ही उपाय है, और वह है उसे हमेशा कर्म में बाँधे रखना । इसी कारण वैदिक यज्ञकर्म का इतना बड़ा विधान है ।

7. आर्थिक साधन हेतु प्रेरणा स्त्रोत

यज्ञकर्म एक पारिभाषिक शब्द है जो समाज एवं राष्ट्र के सभी सकारात्मक एवं आभ्युदयिक कार्यों का सूचक भी है । कर्मशील व्यक्ति कभी बेरोजगार नही रह सकता है । आज हमारे पास सामाजिक कार्यों की कमी नहीं है, इसे करने की इच्छा शक्ति नहीं है । इस इच्छा शक्ति को जाग्रत करने के लिए हमें यह समझना होगा कि हम देवताओं के एवं ब्रह्म के अंश है। उस शक्ति की अनुभूति के लिए हमें वेदोक्त नैतिक मूल्यों को समझना होगा जो हमें अमृत का पुत्र बताते है एवं दार्शनिक विचारो से हमें संतोष, धैर्य एवं कर्म पर आरूढ़ रहने की शिक्षा देते है ; यथा –

'सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।'[13]

अर्थात् जो व्यक्ति यज्ञकर्म करता रहता है, उसे कर्म करने के लिए अथवा व्यापार करने के लिए सोमदेव गाय एवं कर्मशील घोड़े देते है । इससे छोटे-छोटे उद्योगों को स्वयं आविष्कृत करने की प्रेरणा मिलती है । आज हम पूर्ण रूप से अपना कर्तव्य भूल सरकार पर निर्भर है । वेद इस निर्भरता को अस्वीकार करके व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने का उपदेश देता है । इस प्रकार वेदों को आर्थिक साधन हेतु अल्पोपयोगी बताने वालों के लिए यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि वेदों में न केवल परम्परागत आय के साधनों के बारे में बताया है अपितु जो स्वरोजगार हेतु प्रेरणा की वर्तमान में हम चर्चा करते है वह भी वेदों में बहुलता से प्राप्त होती है । आवश्यकता है केवल उसके विशिष्ट अध्ययन की ।

[11] अथर्ववेद – (20/71/12)
[12] इशावास्योपनिषद् (मन्त्र 2)
[13] ऋग्वेद – (1/91/20)

8. निष्कर्ष

इस प्रकार वेद प्राचीनकाल से समूचे संसार के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सर्वांगीण विकास हेतु उद्धार के कारक रहे है तथा सदैव रहेंगे । वे ही हमें इस समय अवनति से उन्नति की और अग्रसर कर सकते है तथा पूरे विश्व की रक्षा कर सकते है । अतः हमें आवश्यकता है कि हम वेदों द्वारा बताये मार्ग पर अग्रसर हों । वेदोक्त मार्ग द्वारा न केवल हम वर्तमान सुरक्षित रख पायेंगे अपितु भविष्य को सुरक्षित रखने हेतु नींव भी प्रशस्त करेंगे, जो कि आगामी पीढ़ी हेतु विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी । उस मार्ग पर चलकर वे भी अपने जीवन को सही दिशा में ले जाते हुए , अपने जीवन को स्वयं द्वारा उत्पन्न होने वाली समस्याओं से स्वयं को सुरक्षित रख पायेंगे । **'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'**[14] की मंगल कामना के साथ पृथिवी को अपनी माता मानकर मनुष्य पृथिवी पर विद्यामान समस्त मानव समुदाय को अपना सहोदर मानकर आपसी संघर्ष एवं वैमनस्यता का परित्याग कर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है ।

[14] अथर्ववेद - 12/1/62